JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

धारचूला मुनस्यारी के लोक संगीत में बटाल गीत का ऐतिहासिक महत्व

देवेन्द्र सिंह धामी
इतिहास विभाग एवं पुरात्तव विभाग,
सोबन सिंह जीना परिसर अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

सार

उत्तराखंड की लोक संस्कृति में विभिन्न प्रकार के गीतों का समावेश हमें प्राप्त होता है, इन्हीं में से कुछ गीतों को लिपिबद्ध किया गया है, और कुछ गीत है पुरातन समय से ही एक दूसरे को कहकर उसे ग्रहण किया जा रहा है इन्हीं में से कुछ गीत हैं जो देवी देवताओं क निवास स्थान तक पहुंचने और उनकी स्थापना और मंदिर की स्थापना करने के लिए धारचूला मुनस्यारी में एक गीत जिसे बटाल के नाम से जाना जाता है, यह गीत अब विलुप्त होने के कगार में है इस गीत को गाने वाले चुनिंदा लोग ही बच गए है।

यह गीत भूमि के देवता भूमियाल की पूजा जिस दिन से षुरू होती है, उसी दिन गांव की महिला एकत्र होकर मंदिर के लिए फूल चावल आटा गुड आदि सामग्री को एक टोकरी में रखकर एक पंक्ति से चलते है, उस समय इस गीत को गया जाता है। जब वह आधे रास्ते में पहुंचे होते हैं, तब उन्हें बाजा बजाकर मंदिर तक लेने के लिए एक समूह आती है और उनका रास्ता रोकते हैं, तब इनमें गीतों के माध्यम से नोक झोक होती है। जिसमें वाद्य यंत्र बजाने वाले कहते हैं, अगर हम रास्ता छोड़ देंगे तो आप हमें क्या देंगे तब महिलाएं रहती हैं, कि हम तुम्हें पैर के जूते देंगे तुम्हें पहनने के लिए कपड़े देंगे तुम्हें टोपी देंगे इस तरह का वाद–विवाद गीतों के माध्यम से होता है, और जब वह मंदिर पहुंच जाते हैं, तो सर्वप्रथम गया जाता है, कि इस मंदिर को बनाने के लिए सबसे उचित लकड़ी कौन सी है, कौन सा पत्थर सबसे बढ़िया है, कौन सा घास सबसे बढ़िया होता है, और इसके शुद्धि के लिए कौन सा ब्राह्मण सबसे बड़ा है, यह सब गीतों के माध्यम से गया जाता है, उसके बाद जो गांव के लोगों द्वारा पुजारी नियुक्त किया गया होता है, उसमें भी यह लोग गीतों के माध्यम से बताते हैं, की कौन सबसे बड़ा पुजारी है, और वह पुजारी सबसे पहले मंदिर में झाड़ू लगाएगी तब जाकर मंदिर के किवाड़ को खोलेगा उसके बाद मंदिर में पोछा लगाएगा मंदिर को सजाएगा उसके बाद लोग मंदिरों मं क्या–क्या चढ़ाने के लिए लाए है, यह भी गीतों के माध्यम से बताया जाता है, अंत में देवता से प्रार्थना किया जाता है, कि 80 वर्ष का बूढ़ा भी इस मंदिर में कुछ मांगने आया है, और 12 वर्ष का बालक भी इस मंदिर में कुछ मांगने आया है, तो आप भेदभाव ना करते हुए सब की मनोकामना पूर्ण करें इन सभी को गीतों के माध्यम से देवता के आंगन में गया जाता है।

बट्ाल गीत का महत्व

संगोत का महत्व हर किसी के जीवन में है, बहुत सारे लोग अपनी चीजों को बताने के लिए इस चीज का सहारा लेते है, और कुछ लोग छुपाने के लिए भी इस चीज का सहारा लेते है, प्राचीन समय में जब लोगों के पास मनोरंजन का कोई साधन नहीं था तो लोग संगीत द्वारा ही अपने विचारों को व्यक्त किया करते थे अपने दुख दर्द को बांटा करते थे और इन्हीं संगीत के साथ अपनी भावनाएं व्यक्त करते थे समय के साथ–साथ इसमें काफी परिवर्तन आ चुके हैं।

बट्ाल गीत गायन का भौगोलिक क्षेत्र

मुनस्यारी उत्तराखंड के सीमांत जिला पिथौरागढ़ में आता है यहां वर्ष भर मौसम अत्यधिक शुष्क रहता है धारचूला मुनस्यारी तीन देशों की सीमाओं से घिरा हुआ क्षेत्र है जहां बड़े–बड़े पर्वत चोटियां और बड़ी–बड़ी नदियां बहती हैं भारत और नेपाल को अलग करने वाली काली नदी का उद्गम स्थान भी यही धारचूला काला पानी नामक जगह पर है जहां से प्राचीन समय में तिब्बत और चीन व्यापार होता था इसी रास्ते से कैलाश मानसरोवर की यात्रा की जाती है यह क्षेत्र सुदूर में होने के कारण यहां की एक अलग संस्कृति है भाषा के साथ–साथ संस्कृत में भी काफी भिन्नता देखने को मिलती है धारचूला में जहां रंग समाज की संस्कृति भिन्नता है वही काली और गोरी नदी के निकट निवास करने वाले अनुवाल समुदाय और अनुसूचित जनजाति के लोगों का पहनावा संस्कृति खान–पान में भिन्नता है जोहर क्षेत्र में रहने वाले शोका का जिनका खान–पान रहन–सहन सब अलग है वही एक छोटे से क्षेत्र में रहने वाले राजी जनजाति जिन्हें बनरोत के नाम से जाना जाता है उनकी संस्कृति अलग है।

उद्देश्य

1. लोकगीतों में वर्णित इतिहास को ऐतिहासिक साक्ष के साथ परीक्षण करते हुए प्रकाश में लाना जिससे इस क्षेत्र के अपरूक्षेय माने जाने वाले इन लोकगीतों को पीढ़ी दर पीढ़ी पहुचाना।
2. लोक संस्कृति के साथ लोक इतिहास को एक नया आयाम दिया जा सके जिससे भावी पीढ़ी को अपनी संस्कृति समझने का अवसर प्रदान करना।
3. इस देवभूमि की लोक संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु प्रयास कर साक्षात्कार के माध्यम से क्षेत्रीय जन मानस तक पहुचाना।

विधि तंत्र

बटाल गाने वाले महिलाओं द्वारा बटाल को दस्तावेजीकरण करना तथा उसमें वर्णन सामग्री का अनुवाद करना इस हेतु लोग गायको द्वारा गाए जाने वाले पाताल में सहभागी अवलोकन तथा डिजिटल माध्यम से रिकॉर्ड किया जाना ऑडियो वीडियो रिकॉर्ड किया गया है इसके भाषा अनुवाद करने हेतु लाग गायको के साथ–साथ अन्य सामाजिक वरिष्ठ नागरिक व संबंधित लिपि विशेषज्ञों का साक्षात्कार लिया गया है।

बटाल गीत के बोल एवं ऐतिहासिकता

कौसन रया देवा क पोहल पूजाय

हिंदी अनुवाद– कौनसे देवता का चढ़ावा पहुचाये

कोड़ी नाग देवा क पोहल पूजाय

कौसन रया देवा क पोहल पूजाय

केदार नाथ देवा क पोहल पूजाय

कौसन रया देवा क पोहल पूजाय

जगर नाथ देवा क पोहल पूजाय

कौसन रया देवा क पोहल पूजाय

हुष्कर देवा क पोहल पूजाय

कौसन रया देवा क पोहल पूजाय

कागबास भड़ड़ देवा क पोहल पूजाय

कौसन रया देवा क पोहल पूजाय

कागीरोल देवा क पोहल पूजाय

कौसन रया देवा क पोहल पूजाय

नौला देवा क पोहल पूजाय

कौसन रया देवा क पोहल पूजाय

छुरमल देवा क पोहल पूजाय

कौसन रया देवा क पोहल पूजाय

कोकिला माता क पोहल पूजाय

कौसन रया देवा क पोहल पूजाय

बाइस बैनी देवी क पोहल पूजाय

कौसन रया देवा क पोहल पूजाय

सिदुवा रमोला देवा क पोहल पूजाय

कौसन रया देवा क पोहल पूजाय

हरूला गरूला देवा क पोहल पूजाय

कौसन रया देवा क पोहल पूजाय

महाकाली देवा क पोहल पूजाय

कौसन रया देवा क पोहल पूजाय

पंच नाम देवा क पोहल पूजाय

इसके बाद जो इन महिलाओं को न्यूतने (लेने के लिए) आते हैं वाद्य यंत्रों के साथ जिसमें दामू नगर भकोर बजाते हुए महिलाओं को मंदिर तक पहुंचाते हैं इन्हीं वाद्य यंत्रों के साथ शुरुआत में कुछ जुगलबंदी होती है जो इस प्रकार हैं–

धोप्याली बाटो छारन छार दी

महिलाएं कहती हैं

बाजा बजाने वाले से रास्ता छोड़ दो

बाटो छारन छारी दियोलो हामी की पॉल रोतेली

रास्ता तो हम छोड़ देंगे लेकिन हम क्या पाएंगे

खुट की पोलिया तै धोप्याली पैरुल

पैर के जूते तुम्हें पहनाएंगे फिर ऐसे ही बार–बार धोपेली कहता है हमें क्या दोग और रौतेली जवाब देती हैं कि हम तुम्हें शरीर के सभी कपड़े देंगे जो क्षेत्रीय भाशा के संपंनता के प्रतीक के रूप में इस प्रकार है।

बाटो छारन छारी दियोलो हामी की पॉल रोतेली

खुट की घुंघरू तै धोप्याली पैरुल

बाटो छारन छारी दियोलो हामी की पॉल रोतेली

घाघ की घघिया तै धोप्याली पैरुल

बाटो छारन छारी दियोलो हामी की पॉल रोतेली

आंग की अंगिया तै धोप्याली पैरुल

बाटो छारन छारी दियोलो हामी की पॉल रोतेली

हाथ की कंगन तै धोप्याली पैरुल

बाटो छारन छारी दियोलो हामी की पॉल रोतेली

गाल की हरेवा तै धोप्याली पैरुल

बाटो छारन छारी दियोलो हामी की पॉल रोतेली

कान क गोखर तै धोप्याली पैरुल

बाटो छारन छारी दियोलो हामी की पॉल रोतेली

नाक की नथुली तै धोप्याली पैरुल

बाटो छारन छारी दियोलो हामी की पॉल रोतेली

सिर क पिछोडी तै धोप्याली पैरुल

इसके बाद जब मंदिर पहुंच जाते हैं तो मंदिर के लिए उपयोग होने वाले वस्तु के बारे में गीतों के माध्यम से फिर चर्चा होती है

अन्न मा क ज्योठ क अन्न हूं

अन्न मा क ज्योठ जों बाल हूं

बरम मां का ज्योठ को बरम हूं

बरम मां का ज्योठ कैल बरम हूं

धामी मां का ज्योठ को धामी हूं

धामी मां का ज्योठ कुंवर धामी हूं

गायी मां का ज्योठ को गायी हूं

गायी मां का ज्योठ कामधेनु गायी हूं

चरी मां का ज्योठ को चरी हूं

चरी मां का ज्योठ भानमती चरी हूं

पेड़ मां का ज्योठ को पेड़ हूं

पेड़ मां का ज्योठ दल हूं

डाली में क बड़ क डाली हूं

डालो मा क बड़ गोगिना डाली

डुंग मा क बड़ डुंग हूं

डुंग मा क बड़ दुत डुंग हूं

कोशल धामी मन्दिर चीनी

मिस्त्री ने मंदिर की चीन्नाई पूरी कर दी है

दार मा क बड़ क दार हूं

दार मा क बड़ दल दार हूं

दल क दार ले मन्दिर दनाया

ताम क पाठल मन्दिर छोया

रूब क द्वार सुना का सांगल

सौ घार गोत सौ घार पानी

सौ डोका माटी सौ डोका गुबोर

कुंवर धामी ले लीप थाप लगाई

केलो वर्मा ले शुद्धि बनायो मन्दिर

कुंवर धामी मन्दिर मे पय्या पाथी पोछा लाई

पंच फल फूल कुंवर धामी थाली भरल

साल जमाल कुंवर धामी थाल भरल

पुत्र वर दिले त्यर सेवा अलो

गायों वर दिले दूध खोल करूल

अन्न वर दिले थाल भरुल

धन वर दिले भेट चढालो

मांग तुस्यार भादो हील त्यर सेवा आरयू

अस्सी वर्ष बुढ़ बारह वर्ष बाल त्यर सेवा आरेन

परिणाम

1. क्षेत्र में स्थित लोक संगीत के कई आयाम और भिन्न–भिन्न तरीके के गीतों को गया जाता है जिसमें से यह बहुत क्षेत्र में गया जाना बंद हो गया है। इन अपरूक्षेय गीतों को पुनः षुरू करने के लिए इनका संरक्षण किया गया है।
2. वर्तमान में यह सिर्फ मुनस्यारी विकासखंड के 99 ग्राम सभाओं में से सिर्फ खतौली सीलिंग सिरतोल टांगा ग्राम सभा में ही गया जाता है। और इन लोकगीतों को सुनने के लिए और अपनी संस्कृति को जानने के लिए विकासखंड के अतरिक्त बहुत अधिक संखा में लोग यहॉ आते है।
3. यह दिव्य क्षेत्र मानसखंड के अन्तर्गत आता हैं। और यहॉ से कुटी गॉव (ज्वलिंग कॉग) इसी क्षेत्र एवं लोक संस्कृतिक क्षेत्र का हिस्सा है। यहॉ के लोकगीत, लोकपरम्परा, धार्मिक मान्यता को जानने एवं इसे विष्व पटल तक पहुचाने में भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी भी इस क्षेत्र में आये। और क्षेत्रोय संस्कृति की खूब प्रषंसा की।

निष्कर्ष

मुनस्यारी सीमांत जिले में बसा हुआ एक विकासखंड है जिसकी अपनी एक अलग संस्कृति है समय के साथ–साथ यहां पर भी पाश्याति सभ्यता का प्रभाव देखने को मिलता है जहां लोग प्राचीन समय में धार्मिक अनुष्ठान मैं बढ़ चढ़कर भाग लेते थे अब इसमें काफी कमी आ गई है विकासखंड के 99 गांव में से सिर्फ चार–पांच ही गांव में बटाल का गायन होता है समय रहते हुए इनको संरक्षित नहीं किया गया तो आने वाले कुछ वर्षों में यह पूर्ण रूप से विलुप्त हो जाएगा इसको गाने वाले लोगों की संख्या भी बहुत कम है इसका एक मुख्य कारण पलायन भी है गांव में बंदर व सूअर का आतंक ज्यादा होने के कारण रोजमर्रा की जरूरत के लिए

लोग पलायन कर चुके हैं वर्ष में सामूहिक पूजा के लिए लोग अपने गांव नहीं पहुंच पा रहे हैं किसी कारण वह गांव आते भी हैं तो कुछ घंटे विताकर वापस चले जाते हैं जिस कारण संस्कृति में कोई रुचि नहीं रह गई है इसको रोकने का और संस्कृति बचाने के लिए सर्वप्रथम ग्राम के नजदीक रोजगार के अवसर पैदा करना होगा तभी जाकर कहीं से संस्कृति को थोड़ा बहुत सुरक्षित रखने का कार्य हो सकता है धीरे–धीरे गांव अगर खाली हो जाएंगे तो संस्कृति भी उन्हीं के साथ विलुप्त हो जाएगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. लछिमा देवी, पत्नी केसर सिंह, ग्राम खर्तोली, तहसील बंगापानी, जनपद पिथौरागढ़, दिनांक 19/03/2023 समय 10 ए. .एम.
2. प्रेम देवी पत्नी शेर सिंह, ग्राम खर्तोली, तहसील बंगापानी, जनपद पिथौरागढ़, दिनांक 19/03/2023 समय 10 ए. .एम.
3. चंद्रा देवी पत्नी जोगा सिंह, ग्राम खर्तोली, तहसील बंगापानी, जनपद पिथौरागढ़, दिनांक 19/03/2023 समय 10 ए. .एम.
4. दुरुली देवी पत्नी नरेंद्र सिंह, ग्राम खर्तोली, तहसील बंगापानी, जनपद पिथौरागढ़, दिनांक 19/03/2023 समय 10 ए. .एम.
5. पानूली देवी पत्नी गोपाल सिंह, ग्राम खर्तोली, तहसील बंगापानी, जनपद पिथौरागढ़, दिनांक 19/03/2023 समय 10 ए. .एम.
6. धनूली देवी पत्नी कुंवर सिंह, ग्राम खर्तोली, तहसील बंगापानी, जनपद पिथौरागढ़, दिनांक 19/03/2023 समय 10 ए. .एम.
7. पनुली देवी पत्नी रूद्र सिंह, ग्राम खर्तोली, तहसील बंगापानी, जनपद पिथौरागढ़, दिनांक 19/03/2023 समय 10 ए. .एम.
8. चनी देवी पत्नी मोहन सिंह, ग्राम सिर्तोली, तहसील बंगापानी, जनपद पिथौरागढ़, दिनांक 26/03/2019 समय 11 ए. .एम.
9. नंदी देवी पत्नी भवान सिंह, ग्राम सिर्तोली, तहसील बंगापानी, जनपद पिथौरागढ़, दिनांक 26/03/2019 समय 11 ए. .एम.
10. अमरा देवी पत्नी केदार सिंह, ग्राम सिर्तोली, तहसील बंगापानी, जनपद पिथौरागढ़, दिनांक 26/03/2019 समय 11 ए. .एम.
11. लीला देवी पत्नी कुंवर सिंह, ग्राम सिर्तोली, तहसील बंगापानी, जनपद पिथौरागढ़, दिनांक 26/03/2019 समय 11 ए. .एम.
12. हिम्मती देवी पत्नी राम सिंह, ग्राम सिर्तोली, तहसील बंगापानी, जनपद पिथौरागढ़, दिनांक 26/03/2019 समय 11 ए. .एम.